सार्वजनिक न्यूनताओं के लिए सार्वजनिक समाधानों की आकांक्षा करना

मानबी मजूमदार और कुमार राणा

हम सब कई सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए साथ में मिल–जुलकर कार्य करते हैं। 1943–40 के दौरान बंगाल में आत्म–विनाशकारी घटनाओं पर टिप्पणी करते हुए टैगोर ने बहुत खेद के साथ कहा था, 'लोग यहाँ तिनका–तिनका करके किसी चीज की रचना करने के लिए सम्मिलित नहीं होते, लेकिन जो पहले से ही बना हुआ है उसे ध्वंस करने का अपवित्र आनन्द लेने के लिए झुण्ड बनाकर आ जाते हैं।'

इस संक्षिप्त लेख का उद्देश्य यही बताना है कि रचनात्मक सामाजिक उद्देश्यों के लिए सामूहिक रूप से प्रयास करना सम्भव है। हाल ही में शान्ति निकेतन में 'स्कूल स्वास्थ्य और स्कूल का स्वास्थ्य' विषय पर प्रतीचि (भारत) ट्रस्ट द्वारा एक कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें स्कूल के शिक्षकों, आँगनवाड़ी के कार्यकर्ताओं, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं और कई 'साधारण या जमीनी स्तर' के शिक्षा तथा स्वास्थ्य अधिकारियों के सामान्य प्रयत्न और अनुभव प्रस्तुत किए गए। उन्हीं के आधार पर इस संक्षिप्त रिपोर्ट में यह बताने का प्रयास किया गया है कि हम जैसे सामान्य लोगों में भी, जो यह दावा नहीं करते कि हममें अलौकिक गुण हैं, इस बात की इच्छा होती है और यह संकल्प होता है कि हम सार्वजनिक न्यूनताओं को दूर करने के लिए सार्वजनिक समाधान ढूँढ़ें और उसके लिए सहयोग दें।

हर सार्वजनिक संस्था को – फिर चाहे वह सरकारी स्कूल हो, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र हो या आँगनवाड़ी केन्द्र हो (हालाँकि इसमें सैन्य संगठन लगभग नहीं आते) – मौजूदा प्रबल सार्वजनिक और नीति की चर्चाओं में अकसर एक बेकार, अप्रभावी और प्रणाली को विफल करने वाला माना जाता है। जो कुछ भी 'सार्वजनिक' है, उसके खिलाफ सामान्यतया एक सन्देहास्पद भाव दिखाई देता है। हम तेजी से व्यक्तिगत, विशिष्ट, निजी या प्राइवेट विकल्पों की तरफ भागते हैं, जैसे कि प्राइवेट डॉक्टर, प्राइवेट ट्यूटर, प्राइवेट परिवहन और यहाँ तक कि एक दरवाजाबन्द आवासीय परिसर, एक प्राइवेट गलियारा और एक पृथक पगडण्डी आदि। इस मीटिंग के प्रतिभागियों ने अपनी समतावादी सम्भावनाओं के लिए बड़ी सख्ती के साथ सार्वजनिक संस्थाओं की रक्षा करने की आवश्यकता को रेखांकित किया और उसमें मौजूद गुणवत्ता सम्बन्धी खामियों को दूर करने की बात भी कही। उन्होंने अपने अनुभव भी बताए कि किस तरह से उन्होंने अपने–अपने क्षेत्रों में घर और स्कूल के बीच एक मजबूत तथा सकारात्मक सम्बन्ध बनाने की, पूर्व–स्कूली बच्चों के पोषण तथा स्वास्थ्य की देखभाल में माताओं की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करने की और बच्चों के शारीरिक, भावनात्मक तथा संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देने के लिए स्कूल एवं स्वास्थ्य केन्द्र के बीच बेहतर समन्वय सुनिश्चित करने की कोशिश की। ये गतिविधियाँ दो अलग और समान रूप से चुनौतीपूर्ण कार्यों पर ध्यान देती हैं : बेहतर सुविधाओं और सेवाओं के लिए माँग पैदा करना और इन माँगो को पूरा करने के लिए सामूहिक कार्रवाई का प्रबन्ध करना।

स्कूल स्वास्थ्य और सामाजिक स्वास्थ्य

एक स्वास्थ्य कर्मचारी ने इस बात की ठोस जानकारी दी कि कुछ स्थितियों में स्तनपान कराने वाली और गर्भवती माताएँ इस बात पर ध्यान क्यों नहीं देतीं कि लोहयुक्त गोलियों के साथ विटामिन सी की गोलियाँ लेना महत्त्वपूर्ण है ताकि शरीर में लोह का बेहतर अवशोषण हो सके। साथ ही उन्होंने कुछ सामाजिक दबावों के बारे में भी बताया जैसे कि कम उम्र की लड़कियों की शादी कर देना जो माताओं में रक्त की कमी का प्रमुख कारण है। उन्होंने अपनी अनुभवी टिप्पणी में कहा, 'जब तक हम अपने पूरे समाज को ऐसी बातों के खिलाफ उकसाएँगे नहीं, तब तक हमारे प्रयास अप्रभावी रहेंगे।'

फिर प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के एक समूह ने अपने स्कूल के निकट एक स्वास्थ्य सर्वेक्षण के आयोजन में अपने विद्यार्थियों की भागीदारी से सम्बन्धित अनुभव को साझा किया। सर्वेक्षण के दौरान विद्यार्थियों को अपने इलाके में स्वच्छता की स्थिति और पेयजल की सुविधा के बारे में वस्तुस्थिति का पता लगाना था और अपने

परिवेश की वास्तविकता के बारे में एक सामाजिक समझ का निर्माण करना था। सर्वेक्षण के पहले दौर के बाद एक बच्चे ने अपने अध्यापक से अनुरोध किया, 'सर, कृपया मुझे अमीरों घर मत भेजिए, वे मेरी अवहेलना करते हैं।' इस अध्यापक ने प्रतिभागियों को याद दिलाया कि, 'इस प्रकार बच्चे को पता चल जाता है कि हम श्रेणीकृत/अनुस्तरित समाज में रहते हैं।' इन बच्चों में सक्रिय नागरिकता की भावना पैदा करने में इन अध्यापकों की ईमानदारी साफ नजर आती है। यह सही है कि 'लोक ज्ञान' हमेशा सहायक नहीं होता लेकिन इस उदाहरण में बुद्धि और ज्ञान का जो प्रदर्शन हुआ वह बच्चों में नागरिक सरोकार का विकास करने में बहुत कारगर सिद्ध होगा।

इस कार्यशाला में अनेक वक्ताओं ने बताया कि कैसे उन्होंने अपने विद्यार्थियों को स्वच्छता, हाथ धोने और शौचालय के उपयोग की स्वस्थ आदतें सिखाने के लिए नए–नए कदम उठाए हैं। शोध से पता चलता है कि भारत के कई हिस्सों में घरों में शौचालय के होते हुए भी लोग शौच के लिए बाहर ही जाते हैं। इस प्रकार शौचालय का उपयोग केवल उसकी उपलब्धता पर निर्भर नहीं है लेकिन उसके लिए व्यवहार में परिवर्तन लाने की जरूरत है। एक स्कूल के अध्यापक ने इस बात का उदाहरण दिया कि व्यवहारगत परिवर्तन के इस अत्यन्त चुनौतीपूर्ण कार्य को आगे बढ़ाने के लिए स्कूल क्या कर सकता है। एक गाँव में तकरीबन सारे लोग अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के थे। वहाँ नौ वर्ष पहले केवल दो शौचालय थे। अब हर परिवार ने सरकार से मामूली–सी सहायता लेकर अपने घर में शौचालय बनवा लिए हैं और ऐसा करने में स्थानीय स्कूल ने मुख्य भूमिका निभाई। प्रत्येक घर से कचरा इकट्ठा करके समुचित रूप से उसका निपटान करना भी अब एक स्वीकृत अभ्यास बन चुका है। एक उपयुक्त रसोईघर में स्कूल का भोजन बनाना, बर्तनों की सफाई, खाने के पहले और बाद में हाथ धोना आदि बातें इस स्कूल के लिए नियमित बात हो गई है। स्कूल की चाबियाँ गाँव वालों के पास रखी जाती हैं। स्वास्थ्य और आई.सी.डी.एस. कार्यकर्ता और अध्यापक आपस में नियमित रूप से सम्पर्क में रहते हैं। अध्यापक के शब्दों में,'हमने गाँव और स्कूल को मिलाकर एक कर दिया है। स्कूल पूरे गाँव की आम सम्पत्ति बन गया है।'

यह सच है कि एक सरकारी स्कूल से यह अपेक्षा करना उचित नहीं है कि वह बच्चों को भाषा, गणित, इतिहास आदि का बुनियादी प्रशिक्षण देने के साथ–साथ अकेले ही हमारे चारों ओर मँडराने वाली ढेर सारी सामाजिक समस्याओं से भी निपट लेगा। फिर भी यह एक ऐसी सार्वजनिक संस्था है, जो सिद्धान्त रूप में, समुदाय और समाज के कई स्तरों और परतों को प्रभावित कर सकती है ताकि वे अपने कुछ आपत्तिजनक व्यवहारों और सामाजिक प्रथाओं की पुनः जाँच कर सकें। और स्कूल बच्चों के माध्यम से सामाजिक क्षेत्र में प्रवेश करने की कोशिश कर सकते हैं। जैसा कि एक अध्यापक ने बताया कि स्कूली वातावरण को एक रचनात्मक तरीके से कैसे निरूपित किया जाए जिससे कि वह आगे चलकर सामाजिक संसार को एक सुन्दर आकार दे। उसने कहा कि, 'अगर हम बचपन में ही बच्चों में स्वच्छता की आदत डाल दें तो समाज का स्वास्थ्य सुधारने में आसानी होगी। ये हमारे विद्यार्थी ही तो हैं जो हमारे प्रयत्नों को अपने घरों तक ले जाते हैं।'

जब स्कूल में प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान करने के लिए समुदाय–व्यापी अभियान और आन्दोलन चलाए जाएँगे तो शायद आमतौर पर सुस्त नौकरशाही मानदण्ड और अभ्यास भी जीवन्त हो जाएँ। स्कूल के शिक्षकों के एक समूह ने इस तरह की एक सामूहिक पहल की शुरुआत की और लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के स्थानीय अधिकारियों के साथ कई बैठकों में भाग लिया जिसमें उन्होंने अपने स्कूल में पेयजल की आपूर्ति के लिए पी.एच.ई. कनेक्शन की माँग की, खासकर इसलिए क्योंकि मौजूदा पी.एच.ई. पाइप लाइन सिर्फ 160 मीटर की दूरी पर है। उनके ये अनवरत प्रयास सफल हुए। अब स्कूल में एक वाशबेसिन है, एक जलाशय है और सुरक्षित पेयजल की आपूर्ति निश्चित है। जैसा कि उनमें से एक ने कहा, 'हम एक स्वस्थ स्कूली वातावरण का निर्माण करने की कोशिश कर रहे हैं जिसे सुनिश्चित करने का आदेश आर.टी.ई. ने भी दिया है।'

इसी तरह से गरीब बच्चों के पोषण के बारे में सामान्यतया जो उपेक्षा देखने में आती है उसका प्रेरणादायक उपचार आई.सी.डी.एस. की एक कार्यकर्त्री के दृढ़ प्रयासों में प्रकट होता है जो बांग्लादेश की सीमा से लगे पश्चिम बंगाल में गरीबी से त्रस्त एक क्षेत्र में एक केन्द्र चलाती हैं। कई बाधाओं के बावजूद वे पूर्व–स्कूली बच्चों के लिए सार्वजनिक पोषण योजना को कारगर बनाने की कोशिश में लगी हुई हैं। उन्होंने बड़ी मेहनत करके बच्चों की माताओं के साथ विश्वास और सौहार्द का रिश्ता कायम किया है और उन्हें इस बात के लिए राजी

कर लिया है कि वे अपनी जमीन के छोटे से टुकड़े में उगाए गए फल और सब्जियों में से जितने फल और सब्जियाँ आँगनवाड़ी की रसोई में दे सकें उतने दें, जिससे सरकार द्वारा दी जाने वाली मामूली रकम की कमी पूरी हो सके। माताओं ने छोटे समूह बना लिए हैं और हर समूह के लिए एक दिन नियत कर दिया गया है; उस दिन ये समूह बारी–बारी से फल और सब्जियाँ केन्द्र में ले जाते हैं। यह कार्यकर्त्री इस बात का ध्यान रखती हैं कि पहले से ही गरीब इन परिवारों पर अनुचित दबाव न पड़े। फिर भी गरीबी से त्रस्त क्षेत्र में तंगहाल जीवन बिताने वाले इन निवासियों ने उनके प्रस्ताव की सराहना की है और बड़ी उदार अनुक्रिया दिखाई है। नतीजतन, इस केन्द्र के संचालन में काफी सुधार आया है। उनके सामूहिक प्रयास ने जिलाधिकारी का ध्यान आकर्षित किया जिन्होंने न केवल जिले के अन्य आई.सी.डी.एस. केन्द्रों को इस प्रयोग से सीखने के लिए प्रोत्साहित किया वरन यह आदेश भी दिया (शायद इस जन समर्थन की मात्रा में तेजी से हुई सहज वृद्धि की प्रशंसा में) कि जिले के प्रत्येक आँगनवाड़ी केन्द्र के लिए सरकारी राशि की मात्रा में बढ़ोतरी की जाए।

ये छोटे–छोटे विवरण हमारे लिए यह समझने के लिए महत्त्वपूर्ण हैं कि बड़ी योजनाएँ और वृहद–संरचनाएँ क्यों सफल या असफल होती हैं। ये हमें बताते हैं कि कैसे कोई स्कूल–शिक्षक या कोई स्वास्थ्य कार्यकर्ता, साधारण रोजमर्रा के तरीके से बहुत कष्ट उठाकर, सार्वजनिक संस्था के कलपुर्जों में तेल डालने के लिए संघर्ष करता है ताकि बच्चे 'अच्छी' आदतें सीख सकें। एक प्रतिभागी ने बताया कि, 'हम कई चीजों का इस्तेमाल करते हैं – जैसे स्वस्थ आहार की आदतों पर कविताओं और अखबार की कतरनों का। कचरे के डिब्बे के रूप में काम में लाने के लिए स्थानीय फार्मेसी से एकत्र किए गए थर्मोकोल इंसुलिन डिब्बों का – जिससे कि विद्यार्थियों में अच्छी आदतें विकसित हों। उन्हें बार–बार बताना पड़ता है। दोहराना और पुनरावृत्ति करना ऐसे साधन हैं जिनका उपयोग करके हम उन्हें सोचने और समझने के लिए प्रेरित करते हैं'।

साहचर्यात्मक शक्ति का प्रयोग करना

ये विशिष्ट उदाहरण एक से नहीं हैं; उनके विवरण में भिन्नता होती है लेकिन मूलभूत सार्वजनिक जीवन्तता में नहीं। फिर भी विरक्त, निष्ठाहीन या भ्रष्ट सार्वजनिक अधिकारियों और पदाधिकारियों की छवि सार्वजनिक निगाहों का ध्यान जल्द खींचती है और किसी गाँव के स्कूल के अध्यापक या किसी ASHA कर्मी का चित्र उपेक्षित ही रह जाता है। हालाँकि वे इसी प्रयास में लगे रहते हैं कि सार्वजनिक संस्थाएँ बेहतर कार्य करें और साथ ही बड़े पैमाने पर जनता को प्रोत्साहित करते रहते हैं कि वे इन संस्थाओं के प्रदर्शन को बेहतर करने के लिए 'शिक्षित हों, प्रेरित हों और संगठित हों।'

मिल–जुलकर कार्य करने की यह UBUNTU शैली, ('मैं हूँ क्योंकि हम हैं') स्वयं को बड़ा दिखाने के तरीके से सार्वजनिक कार्यवाही को सरकारी कार्यवाही और हमारे निजी विकल्पों से अलग करती है। इसमें कोई शक नहीं कि सार्वजनिक संस्थानों में अकसर कमियाँ होती हैं। उन्हें ठीक करना जरूरी है, यह नहीं कि हम उन्हें त्याग दें, क्योंकि हर सार्वजनिक कमी के लिए निजी (प्राइवेट) समाधान नहीं मिल सकता। आखिर एक विशेष और निजी स्वास्थ्य सुविधा का उपयोग करने के लिए हमें कम से कम सार्वजनिक रूप से अनुरक्षित एक ऐसी सड़क की जरूरत तो होगी ही जो हर मौसम में ठीक रहे! निस्सन्देह, कई बुनियादी सेवाओं को साझा करना जरूरी है बनिस्पत इसके कि हर व्यक्ति विशेष रूप से उसका प्रयोग करे। सीधे शब्दों में कहें तो सार्वजनिक वस्तुओं को सार्वजनिक रूप से प्रदान करना चाहिए और सार्वजनिक 'बुराइयों' को सामूहिक रूप से नियंत्रित करना चाहिए। साथ मिलकर समाधान खोजना अपने आप में एक संसाधन है। इससे लोग आपस में जुड़ते हैं, वे एक–दूसरे के लिए सीखते हैं और अपनी साहचर्यात्मक शक्ति का प्रयोग करते हैं।

हो सकता है कि इस मुकाम पर सार्वजनिक मूल्यों के सामूहिक लक्ष्य के खिलाफ दो सन्देह सामने आएँ : क्या हम ऐसी पहलों को बड़े पैमाने पर कर सकते हैं? और क्या हम उन्हें 'सम्भव के मापदण्डों' के भीतर रख सकते हैं? इन प्रश्नों के उत्तर न तो स्पष्ट हैं और न ही सरल, लेकिन वे अकल्पनीय भी नहीं हैं। पहले सन्देह के उत्तर में कार्यशाला में हुई चर्चा से यह स्पष्ट हो गया कि 'साधारण या जमीनी स्तर' के सरकारी पदाधिकारियों में यह क्षमता है कि वे अपने साहस को कमतर समझे बिना मौजूदा दायरे के बाहर जाकर कल्पना कर सकें। एक प्रधानाध्यापक ने शौचालय का उपयोग करने के मुद्दे पर सकारात्मक और व्यावहारिक रूप से यह विचार व्यक्त किया, 'सीमित बुनियादी संरचनाओं और अन्य संसाधनों के बावजूद हमें इन तात्कालिक सामाजिक

मुद्दों का हल ढूँढ़ना है। अगर हम यह सोचें कि जब सब कुछ सही हो जाएगा तभी इनका समाधान ढूँढ़ेंगे तो कभी कुछ नहीं होगा।' इस तरह का व्यावहारिक और वास्तविक दृष्टिकोण हो तो कार्य अवश्य सम्भव होगा।

दूसरा सन्देह यह है कि आशाजनक प्रयास स्थानीय/सीमित और न दुहराए जाने वाले होते हैं। इसके उत्तर में हमें मार्गरेट मीड के गहन अनुबोधक शब्द याद आते हैं, 'इस बात पर कभी सन्देह न करें कि एक छोटा–सा समूह दुनिया बदल सकता है। वाकई यही एकमात्र ऐसी चीज है जिसने ऐसा किया है।' यहाँ जिन लोगों के विचार दर्ज किए गए हैं वे अपने कार्यक्षेत्र में हर रोज सक्रियतावाद के बीज बोते हैं और उसे कायम रखते हैं ताकि दूसरों के जीवन में बदलाव आ सके। यह एक ऐसी चीज की वृद्धि है जिसे एडम स्मिथ ने 'सामाजिक जुनून' कहा है : अर्थात साझा कठिन परिस्थितियों से निपटने के लिए सामूहिक प्रयासों को बढ़ाना और उन्हें मजबूत करना।

मानबी मजूमदार और **कुमार राणा** प्रतीचि संस्थान, कलकत्ता से सम्बद्ध हैं। मजूमदार सेण्टर फॉर स्टडीज इन सोशल साइंसेज, कलकत्ता में पढ़ाती भी हैं। उन्हें शिक्षा की राजनीति, सार्वजनिक स्वास्थ्य और स्थानीय लोकतांत्रिक राजनीति से सम्बन्धित मुद्दों के शोध में रुचि है। राणा को मानव क्षमता के क्षेत्रों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य व पोषण के साथ–साथ गाँव के अध्ययन और अधिकारहीनता के अध्ययन के शोध में रुचि है। उनके निबन्ध, कहानियाँ और सार्वजनिक टिप्पणियाँ नियमित रूप से छपती रहती हैं। मानबी से manabimajumdar@gmail.com पर और कुमार से k.rana7@ gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल